प्रातःक्लास ओमशांति 23.8.67

रिकार्ड– न वो हमसे जुदा होंगे.....ओमशांति। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। बच्चे प्रतिज्ञा करते हैं बेहद के बाप से बाबा हम आपके बने हैं। अंत तक जब तक हम शांतिधाम पहुंचे। आपको याद करते रहेंगे। आप प्यार करते रहेंगे ;क्योंकि आत्माएं समझती हैं परमात्मा बाप को याद करने से हमारे जन्म जन्मांतर के पाप जो सिर पर हैं वह जल जावेगा। उनको योग अग्नि कहा जाता है। और कोई उपाय नहीं। पतित–पावन भी एक...., श्री,श्री108जगदगुरू भी एक परमपिता परमात्मा को कहा जाता है। और कोई को कहना नहीं चाहिए ;परंतु यहां तो अनेक मनुष्य हैं। जो अपन को श्रीश्री108जगदगुरू कहलाते हैं।.....यह पत्थरबुद्धि मनुष्य समझते नहीं। अभी तुम जो पारसबुद्धि बन रहे हो समझते हो यह तो बिल्कुल ही रांग है। एक ही बाप सर्व का सदगतिदाता पतित–पावन है। और फिर कलियुगी पतित मनुष्य अगर अपन को श्रीश्री108जगदगुरू कहलाये तो यह कितनी इन्सल्ट है। पत्थर बुद्धि मनुष्य होने कारण इन्सल्ट भी समझते नहीं हैं। जगत का बाप,जगत का शिक्षक ,जगत का गुरू तो एक ही है। उन्हों की शिक्षक है शास्त्रों की। इनकी शिक्षा ही अलग है। जो भी ऋषि–मुनि आदि होकर गये हैं उन्हों को इस नालेज का पता नहीं है। रचना की आदि,मध्य,अंत का ज्ञान बाप ही देते हैं। मनुष्य को अपन को जगदगुरू कहलाते हैं वह भी ज्ञान दे न सके। मनुष्य जगत का शिक्षक है नहीं। इसलिए बाबा ने एक लिखत बनाई है इसका भी बोर्ड होना चाहिए। विश्व की सदगति दाता श्री,श्री108 जगदगुरू कौन?एक परमपिता परमात्मा त्रिमूर्ति शिव वा अनेक कलियुगी पतित, पुजारी मनुष्य?यह है ही पतित दुनियां। इनमें एक भी पावन होना इम्पासिबुल है। पतित–पावन बाप ही सर्व की सदगति करते हैं। तुम भी उनके बच्चे बने हो। तुम सीख रहे हो कि जगत को पावन कैसे बना सकते हैं। बाबा नये2 बोर्ड बनवाय रहे हैं। सेमिनार में यह बातें निकली नहीं। त्रिमूर्ति आदि चित्रों का ब्लोक भी बहुत अच्छी बनानी है। कोई भी अच्छी ब्लोक बनाय नहीं सकते हैं। न किसकी बुद्धि में डायरैक्शन बैठती है। गीता के भगवान वाला चित्र भी बाबा बनवाय रहे हैं। एक गीता पर कृष्ण का चित्र,दूसरी गीता पर त्रिमूर्ति शिव का चित्र। सिर्फ शिव का नहीं। निराकार शिव ज्ञान कैसे देवे?शिव के आगे त्रिमूर्ति जरूर चाहिए। बच्चों को ब्रह्मा की समझानी देने में कठिनाई होती है। तो समझते हैं सिर्फ कृष्ण का और शिव का चित्र डालें ;परंतु नहीं। शिव जरूर कोई मुख से ज्ञान देंगे ना। और एम ऑब्जेक्ट क्या है?वह भी (साथ) में चाहिए। त्रिमूर्ति के चित्र में सब आ जाता है। ब्रह्मा भी जरूर पुरुषार्थ करता होगा। ब्रह्मा ही सो नारायण बनते हैं। इसलिए विष्णु का चित्र दिया है। सिर्फ नारायण शोभेगा नहीं। तो एक तरफ कृष्ण का चित्र, दूसरे तरफ त्रिमूर्ति शिव जरूर देना है और त्रिमूर्ति के नीचे लिखत भी जरूर देनी है। यह भी लिखना है डीटी सावरंटी आपका जन्म सिद्ध अधिकार है। सो भी अभी कल्प के संगमयुगे युगे। क्लीयर लिखने बिगर पत्थर बुद्धि मनुष्य समझ नहीं सकते हैं और दूसरी बात सिर्फ ब्रह्माकुमारी नाम जो पड़ता है उसमें प्रजापिता अक्षर जरूर चाहिए ;क्योंकि ब्रह्मा नाम बहुतों का है। प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय लिखना है। कुमार अक्षर न डाला तो हर्जा नहीं। उसके नीचे फिर लिखो ''गॉड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी''। बहुत बच्चे डरते हैं कि कहां गवर्मेंट जेल में न डाल दे। इसमें डरने की तो बात नहीं। बड़े2 आदमी गांधी,नेहरू आदि जैसे जेल में पड़े हैं। सन्यासी गुरू लोग भी अभी तक जेल में पड़े हैं। बाप कब ऐसा काम नहीं करेंगे जो बच्चे जेल में जाएं। तुम लिख सकते हो गॉड फादरली वर्ल्ड यूनिवर्सिटी। आगे सिर्फ गॉडली लिखते थे ;परंतु नहीं गॉड फादरली डालना है ;क्योंकि तुमको गॉड फादर पढ़ाते हैं। अब ऐसा अच्छा ब्लॉक सब तो नहीं ....सकेंगे। बॉम्बे वालों को डायरैक्शन देते हैं ब्लॉक बनवाने। कोई2 के ब्लाक तो ऐसे बने हुये हैं जैसे .... लोग। कोई भी अर्थ नहीं समझ सकते। पत्थर बुद्धियां को क्लीयर कर देना होता है। पारस बुद्धि बनाने वाला है ही एक बाप। मनुष्य मनुष्य को पारसबुद्धि बनाय न सके। पत्थर जैसे विश्व को पावन पारस तो नाथ ही बनावेंगे। इस समय एक भी पावन है नहीं। मनुष्य सृष्टि बदल जैसे कि जनावर मिसल बन पड़ी है ;परंतु मनुष्य अपने को जनावर मिसल समझते थोड़े ही हैं। एक/दो में लड़ते गालियां देते रहते हैं।

भूं2 करते रहते हैं। गालियां देना तो आसुरी मनुष्य का पहला धर्म है। बाप कहते हैं पहले2 तो मुझे गाली देते रहो। कच्छ–मच्छ अवतार.....फिर अवतार किसको कहा जाता है समझते नहीं है। अवतार तो होता ही एक का है। वह भी अलौकिक रीत शरीर में प्रवेश कर विश्व को स्वर्ग बनाते हैं। और आत्माएं तो अपना2 शरीर लेते हैं। इनका अपना शरीर है नहीं ;पंरतु ज्ञान का सागर है तो ज्ञान कैसे देंगे?शरीर चाहिए ना। इन बातों को तुम्हारे सिवाय कोई नहीं जानते। जो कुछ इस ब्राह्मण कुल के हैं वह समझते हैं। और अच्छा2 भी कहते हैं ;परंतु फिर मुसीबत है गृहस्थ व्यवहार में रह पवित्र बन यह बड़ा बहादुरी का काम है। महावीर कहते हैं ना। महावीर अर्थात् वीरता दिखावे। यह भी वीरता है। जो काम सन्यासी न कर सके वह तुम कर सकते हो। बाप श्रीमत देते हैं तुम ऐसे गृहस्थ व्यवहार (में) पवित्र रह सकते हो कमल फूल समान। तब ही उंच पद पाय सकेंगे। नहीं तो विश्व की बादशाही कैसे मिलेगी?पढ़ना है। यह है ही नर से नारायण बनने की पढ़ाई। यह पाठशाला है। बहत पढ़ते हैं। इसलिए लिखो गॉड फादरली यूनिवर्सिटी ईश्वरीय विश्व विद्यालय। यह तो बिल्कुल राइट अक्षर है। भारतवासी जानते हैं हम विश्व के मालिक थे। कल की बात है। अभी तक राधा–कृष्ण के मंदिर बनते रहते हैं। कई तो फिर पतित मनुष्यों के भी बनाते रहते हैं। द्वापर से लेकर तो हैं ही पतित मनुष्य। कहां शिव,देवताओं का मंदिर बनाना,कहां पतित मनुष्यों का। यह कोई देवता थोड़े ही हैं। तो बाप समझाते हैं। इन बातों पर ठीक रीत विचार–सागर–मंथन न करने से कोई भी ब्लोक पूरा बनाय नहीं सकते। इतने सेंटर्स हैं। ब्लाक सबके पास अच्छा होना चाहिए। नहीं तो कोई कैसे ,कोई कैसे बनाते रहते हैं। ब्लाक्स बाम्बे में अच्छी बन सकती है। तो बम्बई वालों को बनानी चाहिए। बाबा तो समझाते रहते हैं। दिन प्रतिदिन लिखत चेंज होती रहेगी। फिर कहेंगे और ब्लाक बनाओ। .....मनमनाभव का अर्थ ऐसे समझाया। अरे, पहले थोड़े ही ऐसे याद में ठहर सकेंगे। बहुत थोड़े बच्चे हैं जो हरेक बात का रेसपांड पूरी रीत कर सकते हैं। तकदीर में उंच पद न है तो टीचर क्या करेंगे?ऐसे नहीं आशीर्वाद से उंच पद पाय लेंगे। अपन को देखना है हम कैसे सर्विस करते हैं। विचार–सागर–मंथन चलना चाहिए। यह गीता का भगवान कौन?यह चित्र बहुत जरूरी है ;क्योंकि यह है बड़ी ते बड़ी भूल। सन्यासी लोग चेंज कैसे करें?वह तो शास्त्रों से पढ़ा हुआ ज्ञान ही सुनाते हैं। अपनी बुद्धि तो है नहीं। गीतायें बहुत बनाते हैं। समझते कुछ भी नहीं। बाप कहते न ऐसे श्लोक ,न उनका यह अर्थ है। न गीता का भगवान कृष्ण है। यह मनुष्यों ने बड़ाई कर दी है। कहते हैं व्यास भगवान ने बनाई। अब भगवान है निराकार। वह ब्रह्मा के शरीर बिगर तो बनाय न सके। वह आते ही हैं ब्रह्मा के तन में संगमयुग पर। नहीं तो ब्रह्मा ,विष्णु,शंकर .....के लिए है। बायोग्राफी चाहिए ना। कोई भी जानते नहीं। ब्रह्मा के लिए कहते हैं 100भुजा वाला (वाले) ब्रह्मा पास जाओ। 1000भुजा वाले ब्रह्मा पास जाओ। इस पर भी एक कहानी बनाई हुई है। बाप कहते हैं यहां गपोड़े आदि की बात नहीं है। प्रजापिता ब्रह्मा के ढेर बच्चे हैं ना। यहां आते ही हैं पवित्र बनने। जन्म जन्मांतर अपवित्र बनते आये हैं। अब पूरा पवित्र बनना है। श्रीमत मिलती है मामेकम याद करो। कोई को तो अभी तक भी समझ में नहीं आता कि हम याद कैसे करें। मूंझ पड़ते हैं। बाप का बन और विकर्माजीत न बने तो पाप न कटे। याद की यात्रा में न रहे तो वह क्या पद पावेंगे?भल सरेंडर है ;परंतु इनसे क्या फायदा?जब तक पुण्यात्मा बन औरों को न बनावे तब तक उंच पद पाय न सकेंगे। जितना थोड़ा याद करेंगे कम पद पावेंगे। डबल ताज कैसे बनेंगे?फिर नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार देरी से आवेंगे। ऐसे नहीं हमने सब कुछ सरेंडर किया है इसलिए डबल ताज बनेंगे। नहीं। पहले दास–दासियां बनते2 फिर पिछाड़ी में थोड़ा मिल जावेगा। बहुतों को यह अहंकार रहता है हम तो सरेंडर हैं। अरे, याद बिगर क्या बन सकेंगे?दास–दासी बनने से साहुकार प्रजा बनना अच्छा है। दास–दासी भी कोई कृष्ण.....थोड़े ही झूले में झूल सकेंगे। यह बहुत समझने की बातें हैं। इसमें बहुत मेहनत करनी पड़े।

यह मुरली इतनी ही है।